आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में चित्रित समाज

वैशाली जाधव

अध्यापिका,हिंदी विभाग, के,एल,ई,संस्था बसव प्रभु कोरे कला, विज्ञान तथा वाणिज्य महाविद्यालय,चिक्कोड़ी.

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17264078

ABSTRACT:

समाज विश्व व्यापक है। जहाँ जीवन है वहाँ संबंध है और जहाँ संबंध है वहाँ समाज है। इस अर्थ में प्रत्येक मानव का जीवन सामाजिक जीवन है। इसीलिए समाज को प्राय: मानव संबंधों का जाल कहा गया है। समाज से ही साहित्य का निर्माण होता है। अनेक साहित्यकार जैसे गिरिराज किशोर, विष्णु प्रभाकर, शिवप्रसाद सिंह, भगवतीचरण वर्मा आदि रचनाकार होने के नाते समाज में जो वातावरण फैला है उसका यथार्थ अंकन उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से करने का प्रयास किया है । सामूहिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक संवेदनाओं से संबंध है । परिवार, विवाह, पीढ़ीगत संघर्ष,नारी और उससे संबंधीत अनेक सामाजिक समस्याओं का वर्णन अपने उपन्यास में किया है।

KEYWORDS:

समज में विकास, कामकाजी नारी, विवाह से जुड़ी समस्याएं, नवयुवक की मानसिकता।

प्रस्तावना:

समाज साहित्य का दर्पण है। समाज के अंतर्गत विभिन्न समूहों के व्यक्तियों के बीच परस्पर संबंध होता है । समाज संज्ञाये शब्द सभ्य मानव जगत का सूक्ष्म स्वरूप एवं सार है। हम सब पहले एक मनुष्य है । एक समाज का निर्माण मनुष्य से होता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समाज में रहता है । समाज मनुष्यों का सम्मान है । रियुटर ने समाज की परिभाषा देते हुए कहा हैं कि "समाज एक अमूर्त धारणा है। जो एक समूह के सदस्यो के बीच पाये जाने वाले संबंधों की संपूर्णता का बोध कराती है"1 समाजशास्त्र में केवल व्यक्ति समूह ही नहीं अपितु मानव के व्यवहार क्रिया एवं संबंधों को भी 'समाज' कह सकते हैं । मानव और समाज एक दूसरे से जुड़े हुए है । मनुष्य के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है क्योंकि मनुष्य का अस्तित्व समाज के बाहर नहीं हो सकता । समाज ही व्यक्ति को जीवन जीना सिखाता है। अरस्तू ने समाज की आवश्यकता को प्रतिपादित करते हुए कहा है कि "समाज का निर्माण जीवन के लिए किया गया है ।"2 समाज से ही साहित्यकार का निर्माण होता है। गिरिराज किशोर, विष्णु प्रभाकर, शिवप्रसाद सिंह, भगवतीचरण वर्मा आदि ने अपने उपन्यासों में अनेक समस्याओं पर अपनी लेखनी चलाई है।

आधुनिक समाज के निर्माण में पाश्चात्य जगत के लोग खास तौर से अंग्रेजों के सहयोग में रहे। 19वीं शती के उत्तरार्ध में अंग्रेजी शासन की शिक्षा के प्रचार- प्रसार तथा विज्ञान और तकनीकी विकास आदि के कारण से लोग शहर की ओर आने लगे। समाज में रुढ़ परंपरागत मूल्यों में परिवर्तन होने लगा। गिरिराज किशोर एक ऐसे ही उपन्यासकार हैं जिनके अधिकांश उपन्यासों में आधुनिक समाज का चित्रण देखने को मिलता है। भारतीय समाज के संदर्भ में परंपरागत मूल्य, संयुक्त परिवार, वर्ण व्यवस्था, त्यागमय जीवन, बड़े-बुढो का सम्मान, अहिंसा और पुरुष का वर्चस्व आदि माने गए थे। 'ढाई घर' गिरिराज किशोर द्वारा लिखित उपन्यास में कृष्णा राज ताल्लूकेदार बनने पर वे अपने संयुक्त परिवार से अलग होते हैं। कृष्णराय तालुकेदार के मन में अर्थ के प्रति लालसा होती है । वह बड़े भैया हरिराय से अपने हिस्से की जायदाद को लेकर उनसे बँटवारा करना चाहता है । पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात कृष्णराय दूसरी जाति की महिला से विवाह करके अपने संयुक्त परिवार से अलग

हो जाते हैं । कुछ दिनों बाद छोटे राय यानी राघव राय अरुण की इंजीनियर बनने पर बड़े राय से अनुमति से अलग हो जाते हैं। तब लेखक कहते हैं कि "घर तब टूटा जब अरुण इंजीनियर बनकर लौटा और छोटे राय इस डूबते हुए जहाज को छोड़कर अरुण के साथ किनारे जाखड़े हुए"3 इस तरह जब बड़े राय की आर्थिक स्थिति ठीक थी तो सभी लोग मिलकर रहे जब आर्थिक संकट आने पर उनके दोनों भाई उनसे अलग होते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति को आधुनिक सोच- विचारों ने अर्थ- केंद्रित बना दिया है। इसी उपन्यास में आई,सी,एस बने चौधरी खोमराज सिंह के पुत्र वीर बहादुर अपने पिता से अलग रहते हैं । तब वीर बहादुर बड़े राय से कहते हैं कि "बाबा हमारे पास आकर इसीलिए तो नहीं रहते । गाँव में उनका मन भाई साहब के बच्चों के साथ लगा रहता है..."4 लेकिन असलियत तो यह है कि चौधरी खोमराज सिंह अपने बेटे बहादुर के आधुनिक विचारों से समझौता ना कर सकने के कारण वह अलग रहता है। इस प्रकार आधुनिक समाज में पारिवारिक जीवन आर्थिक अभाव, मतभिन्नता,सफलता के पीछे भागना आनेककारणों से बिखरता हुआ दिखाई दे रहा है।

समाज के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तन ही समाज को पूर्ण रूप से स्वस्थ बना सकता है । विवाह एक सामाजिक बंधन है । विवाह समाज के आधारशीलता है । विष्णु प्रभाकर ने अपने उपन्यासों में विवाह की आवश्यकता पर बल दिया है। 'संकल्प' उपन्यास के माध्यम से विवाह के संदर्भ में यह वर्णन होता है कि संकल्प उपन्यास की सुमति अपनी ननद मोनिका को विवाह करने को सुझाव देती हैं। वह मोनिका को समझाते हुए कहती है कि "विधि को जाने दो अपने मन की बात सोचो और क्षणिक भावुकता से ऊपर उठकर सोचो। तुम तर्क दे सकती हो कि बहुत सी नारियों ने विवाह नहीं किया। मैं वैदिक युग की ब्रह्मचारिणियों की बात नहीं करती। मैं नहीं जानती उस समय का जीवन वास्तव में कैसा था। आज की दुनिया की मैं जानती हूँ। इसीलिए कहती हूँ कि यह उचित नहीं होगा मैं संभव की बात नहीं कहती हूँ। संभव और उचित में अंतर है। "5 आधुनिक युग में विवाह संबंध अर्थ हीन हो गई है। इसमें परिवर्तन की बहुत आवश्यकता है। इसीलिए विष्णु प्रभाकर ने अपने उपन्यासों में विवाह और स्त्री जीवन से जुड़ी अनेक स्थितियों पर अपनी कलम चलाई है।

वर्तमान समय में स्त्री अपनी जिम्मेदारियों के प्रति सजग हुई है। स्त्री घर तथा घर की चारदीवारों से बाहर अपनी कार्यक्षमता से अपनी खुद की तलाश की है लेकिन स्त्री की यह यात्रा-संघर्ष आसान न होकर दिन-ब-दिन कठिन हो रही है। वह स्त्री घर-परिवार के लोगों की भी आलोचना का शिकार बनती जा रही है। विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित 'दर्पण का व्यक्ति' उपन्यास में यशोदा गाँव में मुख्याध्यापि का के रूप में नियुक्त होती है किंतु चरित्र-हीनता का आरोप लगाकर उसे भी वहाँ से हटा दिया जाता है। इस प्रकार घर की चार दीवारों को लाँघकर जब स्त्री घर से बाहर जाती है तब दुनिया की अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार स्त्री अपना स्वतंत्र अस्तित्व विकसित करने के लिए सतत संघर्ष करती जा रही है।

शिवप्रसाद सिंह द्वारा लिखित 'अलग-अलग वैतरणी' उपन्यास के माध्यम से लेखक ने भारतीय ग्राम्य समाज के वास्तविक स्वरूप को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में लेखक ने ग्राम्य जीवन और समाज के पक्ष को उजागर करने का प्रयास किया है। गाँव और ग्रामीण की साधारण छवि में सरलता,ईमानदारी और भोलापन है जिस शहरों में दुर्लभ माना जाता है लेकिन अलग-अलग वैतरणी उपन्यास के माध्यम से यह दिखाया गया है कि ग्रामीण समाज में अब शहरी धोखेबाजी और ढोंग अब शहरों से भी ज्यादा बढ़ गई है। इस संबंध में सुरजू चौधरी सभापति, सुखदेव,देवी चौधरी आदि पत्रों के व्यवहार में देखा जा सकता है। सुखदेव इस संबंध में ग्राम में समाज की वर्तमान स्थिति को और भी अच्छी तरह से स्पष्ट करता है "जब देखो कि सारा गाँव कटकटाकर तुम्हारी निंदा करता है तो तब जाने कि तुम बड़े आदमी हो रहे हो।"6 इस तरह ईमानदारी और भलामानसहत को भी ग्रामीण समाज का अभिन्न अंग माना जारहा है लेकिन अब गाँवों में इसे ढूंढ पाना मुश्किल होता जा रहा है। किसी समाज की संवेदना और मानवता का पता चलता है जब मूल्यों का विघटन होता है तो समाज पतन की ओर चल पड़ता है। इन मूल्यों की रक्षा करने में असमर्थ होते हैं तब समाज में टूटन की प्रक्रिया बढ़ जाती है। इस तरह ग्राम में समाज किस तरह बदलता जा रहा है इसका वर्णन शिवप्रसादजी ने अपने उपन्यास में अलग-अलग स्थितियों में स्पष्ट करते हैं।

आधुनिक कथा के पश्चात समाज में एक बड़ी उथल-पुथल हो गई

है । भारतीय समाज में मूल्यों में गिरावट बढ़ गई है । प्रारंभ से माँ और पिता को भगवान का दर्जा दिया जाता दिया था । उनके दर्शन लिए जाते थे । पहले इस प्रकार सभी को शिक्षा जीवन भर दी जाती थी। किंतु बदलते युग में अनेक कारणों से बदलाव आ गया है । आज के नवयुवक को कोई बुजुर्ग उपदेश दिए तो उन्हें गालियाँ लगती है । इस आधुनिक समाज में इसी प्रकार 'भूले बिसरे चित्र'उपन्यास में भगवतीचरण वर्मा ने जैदेई के माध्यम से माँ और बेटे के बीच जो आदर का स्थान अनादार में किस तरह परिवर्तित हो जाता है इसका वर्णन करते हैं । जैदेई एक धनी व्यक्ति की पत्नी है । लेकिन वह बरजोरसिंह के झगड़े में मारा जाता है । अकेलेपन का जीवन जीना जैदेई को पड़ता है । उसका बेटा दूसरे शहर में काम करता है । जैदेई के पति की मृत्यु होती है और वह उसे ज्वालाप्रसाद के माध्यम से उसे सहारा मिलता है । ज्वालाप्रसाद से वह तन, मन, धन से जुड़ जाती है । ज्वालाप्रसाद का पुत्र गंगा प्रसाद को अंत में अपना पुत्र मानती है । जैदेई का बेटा लक्ष्मीचंद गंगाप्रसाद को पैसे देने के लिए तथा तिजोरी की चाभी हाथ से लेते हुए अपनी माँ को इस तरह गालियां देता है कि "बड़ी आई है गंगाप्रसाद को चाभी देनेवाली, हरामजादी !..... इस चुड़ैल को गाली दूंगा, इसके गुणों को हम लोग जानत नहीं ?"7 इस प्रकार भगवतीचरण वर्मा ने अपने उपन्यास के माध्यम से यहाँ दर्शाया है कि आज के आधुनिक समाज के नवयुवक न बुजुर्गों का मान सम्मान करते हैं ना अपने माता-पिता का सम्मान करते हैं । इस तरह समाज की स्थिति दिन-भ-दिन बदलती जा रही है । आधुनिक समाज जीवन में रिश्ते नाते भी स्वार्थ केंद्रित और खोखले नजर आते हैं । कई लोगों कोन अपने बच्चों का ख्याल होता है और न अपने माता-पिता के प्रति आदर। इस कारण समाज के प्रत्येक अंग में परिवर्तन दिखाई देता है ।

निष्कर्ष:

अंत में यह कह सकते हैं कि सामाजिक परिवर्तन के साथ साहित्य में भी परिवर्तन होता है । सामाजिक परिवर्तन साहित्य को प्रभावित करता है । प्रत्येक युग की सामाजिक विशेषता होती है । युग के अनुसार मनुष्यों की भावनाएँ होती है । उनकी सामाजिक परिस्थितियों को दर्शाते हैं । साहित्यकार भी उसी समाज का अंग होता है । समज में विकास, कामकाजी नारी, विवाह से जुड़ी समस्याएँ तथा नवयुवक की मानसिकता आदि का वर्णन अपने उपन्यासों में किया है । साहित्य के

विकास के लिए समाज के प्रत्येक अंग का योगदान होता है। साहित्य का अध्ययन समाज में ही संभव है।

संदर्भसूची:

1. समाज शास्त्र के सिद्धांत- विद्याभूषण एवं सचदेव-पृ. सं-68
2. अरस्तु, पॉलिटिक्स-खंड-3-पृ. सं-26
3. गिरीराज किशोर-ढाई घर-भरती यज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली-1991-पृ. सं-249
4. गिरीराज किशोर-ढाई घर-भरतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली-1991 पृ. सं-154
5. विष्णु प्रभाकर-संकल्प- वाणी प्रकाशन-1993-पृ. सं-191
6. शिवप्रसाद सिंह, अलग-अलग वैतरणी- लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद-1968-पृ. सं-252
7. भगवती चरणवर्मा-भूले बिसरे चित्र-राजकमल प्रकाशन-1959-पृ. सं-185-186

Funding:
This study was not funded by any grant.

Conflict of interest:

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

About the License:

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.